30/5/20

B.A. Part I (1)

[illegible]

मध्यकालीन हिंदी काव्य

डॉ० आराधना कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस० एस० कॉलेज
जहानाबाद

प्रश्न :- तुलसीदास के रामचरित मानस में निहित विशेषताओं का उल्लेख करें।

अथवा

तुलसीदास का साहित्यिक कवि परिचय प्रस्तुत करें।

उत्तर :- मस्तक पर टीका, हाथ में माला, होठों पर राम नाम और हृदय में अगाध भक्ति रखने वाले हुलसी पुत्र तुलसी का नाम आज पूरे भारतवर्ष में कौन नहीं जानता है। जो स्थान संस्कृत साहित्य में कालिदास का है, बंगला साहित्य में चंडीदास का है, फारसी साहित्य में शेख सादी का है, अंग्रेजी साहित्य में शेक्सपियर का है तथा मैथिली साहित्य में विद्यापति का है इससे भी उच्च स्थान हिन्दी साहित्य में तुलसीदास का है। ये तो इनकी महानता से प्रभावित होकर किसी ने इन्हें – बुद्धदेव के बाद भारतवर्ष का सबसे बड़ा लोकनायक माना है

पर दुर्भाग्य यह कि और तो और इनका जन्म वर्ष, निधन वर्ष, जन्म स्थान जाति इत्यादि आज भी विवाद का विषय बना हुआ है। फिर भी ज्यादातर लोग इनकी माता का नाम हुलसी, पिता का नाम आत्माराम, बचपन का नाम रामबोला,

क्रमशः —

तुलसी — क्रमशः — 30/5/20

स्त्री का नाम रत्नावली, जन्मस्थान राजापुर, जाति ब्राह्मण की तथा गुरु का नाम नरहरि दास मानते हैं जो मेरे जानते भी प्रमाणिक हैं। इन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की जिसमें पार्वतीमंगल, जानकी मंगल, गीतावली, कवितावली, दोहावली, विनयपत्रिका तथा रामचरित मानस प्रमुख हैं पर इनमें से रामचरित मानस का अद्वितीय महत्व है।

तुलसीदास ने अपने काव्य में जीवन के विविध पक्षों का चित्रण किया है। मानव-जीवन का कोई ऐसा कोना, उसकी एक भी ऐसी परिस्थिति नहीं जहाँ तुलसी की निगाह न पहुँची हो तथा उसका तन्मयतापूर्वक चित्रण इन्होंने न किया हो। रामचन्द्र शुक्ल ने ठीक ही कहा है — "मानव-प्रकृति के जितने रूपों के साथ गोस्वामी जी के हृदय का रागात्मक सामंजस्य हम देखते हैं उतना अधिक हिन्दी भाषा के किसी और कवि के हृदय का नहीं।"

01 122-244 Sunday

चरित्रों की विविधता का चित्रण तुलसी के मानस या इनके काव्य का प्रमुख अंग है। एक ओर शक्ति, शील और सौन्दर्य तथा आदर्श से भरा हुआ राम का चरित्र है तो दूसरी ओर तामसी प्रकृति से युक्त रावण का चरित्र है। एक ओर पतिव्रता से पूर्ण साध्वी सीता का चरित्र है तो दूसरी ओर वासना से युक्त शूर्पणखा

क्रमशः —

(3)

तुलसी – क्रमशः – 30/5/20

का चरित्र है। पूरे संसार के साहित्य में राम का विरोधी चरित्र बेजोड़ है। तुलसी के चरित्र अपनी सम्पूर्णता में जितने विराट् हैं, रंग चित्रों में उतने ही सजीव और विशिष्ट।

तुलसी ने अपने चरित्र के आलोक में केवल मनुष्य को ही देवता नहीं बनाया बल्कि देवताओं को भी मानवीय धरातल पर उतार कर धरती और स्वर्ग के बीच एक इन्द्रधनुषी सेतु तैयार कर दिया है। राम के चरित्र का मानवीय पक्ष ही उनके व्यक्तित्व का सबसे बड़ा आकर्षण है। सीता का हरण हो जाने पर राम सामान्य मानव की तरह पशु-पक्षियों से सीता का पता पूछते हैं –

हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी
तुम देखी सीता मृगनैनी ॥

लक्ष्मण के शक्तिबाण लगने पर भी वे अपने पुरुषार्थ को भूलकर एक सामान्य मानव की तरह विलाप करते हैं –

जैहउँ अवध कौन मुँह लाई।
नारी हेतु प्रिय बंधु गँवाई ॥

अयोध्याकाण्ड को 'रामचरितमानस' का हृदय माना गया है। इसको मानस में वही स्थान प्राप्त है जो कामायनी में लज्जा सर्ग को। इस काण्ड में राम का चरित्र सबसे अधिक लौकिक धरातल पर प्रतिष्ठित है।

महाकवियों का काव्य अपने युग के साथ-साथ युग-युग के लिए भी होता है, वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिये भी होता है।

क्रमशः –